Vol 5 Issue 10 Nov 2015

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

Indian Streams Research Journal
ISSN 2230-7850

Impact Factor : 3.1560(UIF)
Volume - 5 | Issue - 10 | Nov - 2015

डॉ. शंकर शेष के नाटकों का कथ्य

कमलजीत
सहायक प्राध्यापक,हिन्दी विभाग ,
शाह सतनाम जी बॉयज कॉलेज, सिरसा.

सारांश :

डॉ. शंकर शेष हिन्दी नाट्य सृष्टि के सशक्त हस्ताक्षर हैं। उन्होंने केवल नाटकों का सृजन ही नहीं किया अपितु नाटकों का लेखन, निर्देशन एवं मंचन भी किया है। उन्होंने अपने नाटकों के माध्यम से प्राचीन कथाबीजों के नये अन्वय को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है, तो वहीं दूसरी ओर उन्होंने समसामयिक संदर्भों, विषयों एवं विवादों को उठाकर वर्तमान जीवन की व्याख्या भी की है। उनकी दृष्टि से रंगमंच निर्माण की प्रक्रिया एक संस्कार था, ऐसा संस्कार जिसके निर्माण में पीढ़ी–दर–पीढ़ी प्रयास की आवश्यकता है। इनकी समूची जिंदगी नाटक की बुनियाद पर खड़ी है। उनकी जीवनी, व्यक्तित्व सबमें नाटक एक अभिन्न तत्त्व के रूप में उपस्थित होता है।

प्रस्तावना :

समकालीन हिन्दी नाटकों में पुरानी लीक से हटकर शोषित मानव की पीड़ा, मनुष्य की परिस्थितिजन्य और पारिवेशिक विसंगतियों, युवा विद्रोह तथा राजनीति में भ्रष्टाचार आदि विशय महत्त्वपूर्ण हो गये हैं। आदर्श के स्थान पर युग की यथार्थ स्थिति का अंकन तीव्रता से होने लगा है। समकालीन युग की उथल–पुथल, अवसरवाद, भाई– भतीजा वाद, भ्रष्टाचार, महंगाई, गरीबी, घूसखोरी, काला बाजारी के कारण नैतिक अवमूल्यन होता जा रहा है अर्थात् हमारा जीवन बहुमुखी बनता जा रहा है। अतः आज की स्थिति कुछ अजीब–सी हो गई है–महाभारत के शान्तिपर्व से मिलती–जुलती, मूल्य क्षत–विक्षत् हो गए हैं, आस्था और विश्वास सांघातिक चोटों से कराह रहे हैं। आज हम अपने सलीब स्वयं ढोने वालों की स्थिति में नहीं, हमारी स्थिति दूसरों द्वारा गाड़े गए सलीबों पर जबरदस्ती लाद दिए गए लोगों की है। इन्हीं सब स्थितियों का आंकलन कर नाटकों को अपने जीवन का पर्याय मानने वाले शेष ने आधुनिक जीवन के हर पक्ष विश्लेषण को मानवीय कसौटी पर कसा–परखा है और संघर्षरत मानव की आंतरिक भाव छवियों की पीड़ाओं के नये कोण, नये अक्स बनाए हैं। उनका नाट्य–साहित्य किसी विचारधारा का गुलाम न होकर आज के जीवन की विरूपताओं के नंगेपन, जटिल असंगत स्थितियों के दुहरेपन, अंतर्विरोधों से युक्त जीवन की अनेक दृष्टियों से

जांचता–रखता है। यदि आज मानव जीवन आस्था–अनास्था के द्वन्द्व, नैराश्य और असुरक्षा की भावना, मृत्युबोध की अनुभूति से त्रस्त है, आत्मनिर्वासन, ऊब–खीझ, क्षोभ से प्रताड़ित है, विरोध एवं विद्रोह से चालित है, संत्रास, कुंठा, विघटन, अजनबीपन, विद्रूपता से आतंकित–सशंकित है तो उनके नाटक उसे प्रस्तुत करने को अभिशप्त हैं। इस संक्रमणकालीन धुंध को चीरते हुए उन्होंने संवेदना की जांच से स्वयं को तपा कर आज के व्यक्तित्व और उसकी आत्मा के घुटनशील स्वरों को खुलकर वाणी दी है। उनके नाटकों में भी अन्याय की परंपरा, घिनौनी राजनीति, सत्ता लोलुपता, मदांध व्यक्ति, मानव की स्वार्थ–वृत्ति, प्रसिद्धि की महत्त्वाकांक्षा और अंतर्मन की पीड़ा जैसे विषयों के साथ ही नारी जीवन की सार्थकता को अनुभव करने वाले पुरुष की बदलती मानसिकता की अभिव्यक्ति भी हुई है। उनके नाटकों में मूल्यों के पतन तथा उसकी रक्षा व मानवीयता की भावना को विकसित करने के बहाने अपनी संस्कृति की रक्षा करना ही उनके नाटकों की प्रमुख विशेषता है। जमींदार परिवार में जन्मे एक कलाकार की यात्रा वस्तुतः राजपथ की यात्रा है। यायावर जीवन ने इन्हें जनपथ के सत्य–सूत्र दिए और वे राजपथ के फूल भरे कुंजों को छोड़कर कटंकित जन–पथ के सहभागी बन गए। अन्तर्विरोधी प्रवृत्तियों के बोझ तले दबे कराह रहे मनुष्य के मन की वेदना–विष को पीने का संकल्प लेकर उनके कलाकार मन ने राजपथ के गलीचों, नर्म बिछौनों का मोह त्याग दिया और मानव जीवन के अंतर–तम में बैठने की ललक उन्हें जनपथ पर खींच लाई और यही जनपथ उनके नाटकों के कथ्य का स्रोत बना।

कथ्य के आधार पर उनके नाटकों का विवरण इस प्रकार है

'मूर्तिकार' मनुष्य जीवन का सार्थक नाटक माना जाता है क्योंकि इसमें मध्यमवर्गीय परिवार के जीवन की विडम्बना और यथार्थ को विभिन्न कोणों द्वारा उजागर किया गया है अर्थात् यह मध्यमवर्गीय परिवर की जीवन की कहानी है वह जीवन जो अर्थदंशित विद्रूपता के कारण परिस्थितियों की विषमता के सामने हथियार डाल चुका है। यह नाटक एक स्तर पर स्त्री–पुरुष के बीच के लगाव और तनाव का दस्तावेज है, तो दूसरे स्तर पर यह पारिवारिक समस्याओं की गाथा है। नाटक का प्रमुख पात्र 'शेखर' एक कलाकार है जो गरीबी का पहाड़ ढोते–ढोते टूट जाता है परन्तु समझौता नहीं करता है। वह कला के आदर्शों को बनाए रखता है। उसके लिए वह मर जाना पसंद करेगा परंतु अपने कला के आदर्शों से गिर नहीं सकता। मिट्टी को आकार और सौन्दर्य देने वाला अर्थात् मिट्टी में कला से प्राण फूँकने वाला मूर्तिकार अपने परिवार के लिए दो जून का भोजन जुटाने में भी असमर्थ है। भारतीय कला–रचना का यह कैसा दुर्देव है, मरणोपरांत कलाकारों और साहित्यकारों की कब्रों पर घी के दीपक–जलाये जाते हैं लेकिन उनके जीवित रहते उनके परिवारों पर छाये अस्तित्व–संकट को समाज और सत्ता दूर करने का प्रयत्न तक नहीं करती, खाने को तरसता उनके परिवार को तब कोई पूछने वाला तक नहीं होता है। उसकी पत्नी उसे कई बार समझाती है परंतु उसका साथ नहीं छोड़ती है। उसकी गरीबी का फायदा उठाकर उच्चवर्ग के लोग (मुंशी, मालिक आदि) उसका शोषण करना चाहते हैं अर्थात् उसका सौदा करना चाहते हैं परन्तु वह अडिग भारतीय आदर्शमयी नारी, वात्सल्यमयी माता और पति के दुःख को बाँटने वाली नारी है। अपने पति को गृहस्थी की कष्टमयी जिंदगी से वाकिफ तो कराती है परंतु उसका साथ नहीं छोड़ती है। शेखर कालजयी रचना की सृष्टि करता हुआ यह भूल जाता है कि उसकी पत्नी ललिता कितनी मुश्किल से गृहस्थी चला रही है –

'रत्नगर्भा' नाटक का कथ्य स्त्री–पुरुष के जीवन संघर्ष की कथा को प्रस्तुत करता है। रत्नों की खान अर्थात् गुणों की खान जिसके गर्भ में हो वही 'रत्नगर्भा' है। रत्नगर्भा या हृदयगर्भा नारी को खुंखार जानवरीयत से भरा नर किस प्रकार रौंदता है, इसका चित्रण इस नाटक में किया गया है, तो दूसरी ओर इतिहास साक्षी है कि पुरुष की प्रेरणा का उत्स नारी है। झरने का उत्स चट्टान के नीचे होता है फिर इतिहास को झुठलाया भी कैसे जाए। उहोंने अपने इस नाटक में पुरुष भाग्य को सिद्ध करने में प्रिया की आत्मिक प्रेरणा को आंका–पिरोया है। उन्होंने इस नाटक के माध्यम से समाज के उस तथाकथित प्रतिष्ठित वर्ग पर खुला प्रहार किया है जो बनावटी जिंदगी जीने में विश्वास रखते हैं। इस नाटक में उन्होंने मनुष्य की आत्मा के सौन्दर्य और सतही शारीरिक सौन्दर्य का संघर्ष दिखाया है कि किस प्रकार आज व्यक्ति धीरे–धीरे मन से तन की ओर बढ़ रहा है। आज समाज में प्रायः हर आदमी का मन रुग्ण है। आज समाज में उसकी ही प्रतिष्ठा है जिसके पास सुंदर तन और इस तन की रक्षा के लिए धन है। नाटक का प्रमुख पात्र सुनील भी इसी मानसिकता का शिकार है। यह नाटक सुनील की पत्नी इला के जीवन की कहानी है। इला एक पतिव्रता नारी है वह विवाह के पश्चात् अपने गहने बेचकर अपने पति को पढ़ाई करने के लिए विदेश भेज देती है। एक दिन अचानक से दुर्भाग्यपूर्ण स्टोव के फटने से वह बुरी तरह से झुलस जाती है और उसका चेहरा बिगड़ जाता है।

इनकी 'बिन बाती के दीप' प्रथम प्रकाशित नाट्य–रचना है। यह रचना नाटककार की मँजी हुई कलम का कमाल सिद्ध होती है। इस नाटक में भी उन्होंने स्त्री–पुरुष संबंधों को एक नये धरातल पर परखने का प्रयत्न किया है। महत्त्वाकाँक्षा में पागल बने लोग किस तरह अनैतिक बन जाते हैं या एक क्षण का मोह किस प्रकार व्यक्ति को अनैतिक बना देता है, इसका दिग्दर्शन प्रस्तुत नाट्यकृति में किया गया है। जीवन में अतिरिक्त महत्त्वाकाँक्षा की धुन सवार होने वाले व्यक्ति के चारित्रिक अधः पतन को चित्रित करते हुए नाटककार ने नये परिपार्श्व में स्त्री–पुरुष संबंधों की नयी परिभाषा को सफलतापूर्वक इस नाट्यकृति के माध्यम से प्रस्तुत किया है यही इस नाटक का कथ्य है। स्त्री–पुरुष संबंधों को उन्होंने इस नाटक में नारी की समर्पित मूर्तिमंत सशरीर प्रतिमा में आंका है, जो यथार्थ से दूर आदर्शवादी मूल्यांकन है। 'क्षण के मोह' से मनुष्य के जीवन में होने वाले पतन व उसके दुष्परिणामों को उन्होंने इस नाटक में चित्रित किया है। नाटक की कथावस्तु स्त्री–पुरुष संबंधों को एक नया रूप प्रदान करती है। किस प्रकार एक पुरुष अखिल भारतीय प्रसिद्धि पाने हेतु मोह से अभिभूत होकर अपनी पत्नी से विश्वासघात करता है, इसका चित्रण इस नाटक में हुआ है। पति–पत्नी के सुखी जीवन का आधार परस्पर विश्वास है। विशाखा और शिव एक–दूसरों से अत्यंत प्रेम करते हैं। अचानक विशाखा अपनी आँखें खो बैठती है परंतु फिर भी शिव उससे विवाह करता है। कविता लिखने वाला शिव एक प्रसिद्ध कवि बनना चाहता है परन्तु बाद में उसका कविता सृजन बंद हो जाता है और विशाखा जो उपन्यास लिखती है, उसकी प्रतिभा और अधिक निखरती है, प्रसिद्धि पाती है।

वे तत्कालीन युग की परिस्थितियों, समस्याओं आदि से पूर्णतः परिचित थे। उन्होंने उस युग की तत्कालीन परिस्थितियों से यह तथ्य प्रस्तुत किया है कि हमारे सामाजिक–सांस्कृतिक मूल्यों को दूषित करने वाले प्रमुख कारक है – धर्म और संप्रदाय की राजनीति करने वाले स्वार्थी तत्त्व। इन दबाव–समूहों का शिकंजा आम–आदमी का दमन और शोषण करते हुए दिनों दिन कसता जाता है। जात–पांत, सांप्रदायिकता, छूआछूत आदि ने देश को खोखला कर दिया है। इससे संघर्ष करके ही हम अपने देश को बचा सकते हैं अर्थात् वे इस गहरी जड़ों वाले अंधविश्वास को मिटाने के लिए कुर्बानी की आवश्यकता महसूस करते हैं क्योंकि परतंत्रता से भी भयानक अभिशाप है 'जातिवाद', जिससे मुक्त होना मानव कल्याण के लिए आवश्यक है। प्रस्तुत नाटक का कथ्य समाज में बढ़ती जा रही जातिवाद, साम्प्रदायिकता, छुआछूत आदि की भावना को उजागर करता है। नाटककार ने इस नाटक में एक ऐसी बाढ़ का वर्णन किया गया है जो हमें दिखाई नहीं देती लेकिन हम उससे घिरे हुए हैं और यह है आपसी फूट, सांप्रदायिकता, अनुशासनहीनता, स्वार्थ और हिंसा तथा जातिवाद की बाढ़। वे इस जातिवाद की संकीर्ण विनाशक बाढ़ पर मानवता का बाँध बनाना चाहते हैं। प्रस्तुत नाटक में उन्होंने नाटक के नायक नवल के माध्यम से गांधीवादी विचारों की पुष्टि की है अर्थात् नवल गांधीवादी विचारधारा का मूर्त रूप हैं। नवल, चमार जाति के छीतू और लक्ष्मी का बेटा है। वह पढ़ने–लिखने के लिए शहर जाता है तथा अपनी पढ़ाई पूरी करके वापस गाँव में लौट आता है वह नौकरी नहीं करना चाहता है, वह कहता है– ''हरिजन में जो पढ़–लिख लेता है, सरकारी नौकरी में चला जाता है। कहता है, एक बड़ी भारी मसीन का पुर्जा बन जाता है और फिर वह हरिजनों से ही दूर भागता है।'' वह गांधी जी का पुजारी है और अहिंसा पर बल देता है।

मध्यप्रदेश शिक्षा एवं संस्कृति विभाग में अनुसंधान अधिकारी होने के कारण मध्यप्रदेश के बस्तर, नारायणपुर जैसे परिवेश में उनको घूमना पड़ा था। अपने भ्रमण के दौरान उन्होंने बस्तर, नारायणपुर परिवेश की जिंदगी व जनजीवन को करीब से देखा। वहाँ के भूमिहीन किसानों पर जमींदार तथा वन के अधिकारी आदि खुले आम अत्याचार किया करते थे। अतः उनके अत्याचार को देख उनके मन में आदिम लोगों के प्रति गहरी आस्था पैदा हुई। 'पोस्टर' नाटक का कथ्य इसी गहरी आस्था का परिणाम है। उन्होंने महाराष्ट्र की कीर्तनशैली में आदिम

जाति के लोगों पर होने वाले जमींदारों तथा वन के अधिकारी वर्ग के अत्याचारों का चित्रण किया है। यह नाटक शोषक–शोषितों का वर्ग–संघर्ष उजागर करता है। वे आदिम जाति के लोगों पर हो रहे अन्याय व अत्याचार से भरी जिंदगी में परिवर्तन की आवश्यकता महसूस करते हैं। वे चाहते हैं, उनकी आदमियत जागे और वह उन अन्याय व अत्याचारों के लिए संघर्ष करें। उनका यह नाटक शोषितों को संघर्ष करने की प्रेरणा देता है।

मानव–सभ्यता के साथ मानवीय मूल्य और समाज के साथ व्यवस्था के मूल्य स्वतः ही निर्मित होते चले गए और साथ ही यह प्रश्न उठ खडा हुआ कि क्या मानवीय मूल्यों से व्यवस्था के मूल्य ऊपर हैं इसी प्रश्न को नाटक–फलक पर उठाते हुए उन्होंने 'फंदी' नाटक की रचना की है। साधारण मनुष्य व ईमानदार आदमी को पारिवारिक उत्तरदायित्व, सामाजिक परिस्थितियाँ, गरीबी आदि का परस्पर संघर्ष अपराधी बना देता है। उन्होंने बड़ी सशक्तता के साथ इस संघर्ष, करुणा, समाज एवं कानून के संघर्ष को प्रस्तुत करने का सफल प्रयत्न किया है। 'फंदी' का संपूर्ण कथ्य स्रोत न्याय–व्यवस्था के सामने प्रश्नचिह्न लगाने वाला कथ्य स्रोत है। इस कथ्य के माध्यम से नाटककार वर्तमान युग में निम्न वर्ग की शोषित व दयनीय जिंदगी पर प्रकाश डालने के साथ–साथ वकीलों, कम्पनियों और सरकारी कार्यालयों की भ्रष्ट नीति पर व्यंग्यात्मक प्रहार कर जाता है।

प्रस्तुत नाटक 'एक और द्रोणाचार्य' का कथ्य महाभारतकालीन है अर्थात् उन्होंने महाभारतकाल के संदर्भों को आधुनिक जीवन से जोड़ने का प्रयास किया है। आज का युग यांत्रिक युग है। इस यांत्रिक युग में आज लोगों के मन में मानवीय प्रेम और संवेदना समाप्त हो चुकी है। सब स्वार्थी हो गए हैं। सब केवल अपनी चिंता में व्यस्त हैं। उन्होंने कुछ समय जीविका के रूप में अध्यापक के पेशे को स्वीकारा था। कॉलेजों में पढ़ाते समय उन्होंने छात्र, अध्यापक, प्रिंसिपल तथा शिक्षा–व्यवस्था में हस्तक्षेप करने वाले शिक्षा संस्थानों के प्रमुखों को नज़दीक से देखा और परखा था।

उनका 'खजुराहो का शिल्पी' नाटक समस्त नाटकों से थोड़ा भिन्न विषय पर आधारित है। इस नाटक में नाटककार के दार्शनिक विचारों की अभिव्यक्ति तथा गंभीर चिंतन या दर्शन दृष्टिगत होता है। प्रस्तुत नाटक में उन्होंने प्राचीन काल में संसार में होने वाले 'माया' और 'मोक्ष' के संघर्ष के चित्रण को एक नये ढंग से उभारा है अर्थात् कहा जा सकता है कि प्रस्तुत नाटक का कथ्य निरंतर संसार पर हावी होने वाला 'मोह का क्षण' इस दर्शन संघर्ष को लेकर उपस्थित हुआ है अर्थात् 'मोह का क्षण' ही मानव को उर्ध्वमुखी बनाता है। इन्हीं क्षणों के उतार–चढ़ाव में प्रवृत्ति–निवृत्ति के मार्ग का रहस्य बताया गया है जिसे व्यक्त करना ही नाटककार का लक्ष्य है। उनकी यह नाट्य कृति 'खजुराहो का शिल्पी' खजुराहो के मंदिर के स्थापत्य के दर्शन को नाटक के माध्यम से संप्रेषित करती है। खजुराहो के मंदिर की स्थापना के माध्यम से उन्होंने मनुष्य जीवन में होने वाले मोक्ष के आनंद को रहस्य बताने का प्रयत्न किया है। जो बात यह मंदिर कहना चाहता है, वही बात नाटककार भी कहना चाहता है। अंतर यह है कि खजुराहो का मंदिर स्थूल प्रस्तर खंडों में ढाली गई भंगिमाओं से अपनी बात कहता है, चुप रहकर और नाटककार की बात जीवंत चरित्रों के माध्यम से अभिव्यक्त होती है।

इस प्रकार डॉ. शंकर शेष के अनेक नाटक हैं जिनके कथ्य विविध विषयों से संबंधित हैं। 'अरे! मायावी सरोवर' नाटक में उन्होंने स्त्री जीवन को पुरुष जीवन से अधिक सार्थक, श्रेष्ठ, सृजनशील और समर्पण भरा माना है। 'कालजयी' नाटक में उन्होंने राजनीति की भयंकर तथा क्रूर विद्रूपता का सजीव चित्रण किया है। 'कालजयी' नाटक का शीर्षक प्रतीकात्मक है जिसने काल को अपनी मुट्ठी में बंद कर लिया हो – वही कालजयी है। इस नाटक में राजा की वृत्ति अमर है। राजा की कुर्सी पर बैठने वाला व्यक्ति का चेहरा बदल जाता है उस कुर्सी पर बैठने के बाद व्यक्ति की कृति भी बदल जाती है। त्यागी व्यक्ति भी राजासन पर बैठकर स्वार्थी बन जाता है। कुर्सी की महिमा अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है इसलिए उस पर बैठने वाला राजा अमर है। उनका 'चेहरे' नाटक समकालीन मनुष्य की विसंगतियों को उजागर करता है। आज मनुष्य आधुनिकता के प्रभाव के कारण स्वार्थी हो गया है। वह सुविधा और सुरक्षा की चादर ओढ़कर अपने को दूसरों से छुपाने की कोशिश करता है। उसके जीवन में मुखौटा मुख्य हो गया। 'चेहरे' अर्थात् चेहरे, सबके चेहरे, अंदर से कुछ बाहर से कुछ दिखने वाल इन चेहरों अर्थात् मुखौटों का वर्णन ही नाटककार ने इस नाटक में किया है। 'आधी रात के बाद' नाटक में उन्होंने समाज के सफेदपोश वर्ग के लोगों के आचरण पर प्रहार किया है। प्रस्तुत नाटक में नाटककार ने प्रतिष्ठित अर्थात् उच्चवर्ग, समाज के तथाकथित समाज सुधारक, बिल्डर, फिल्म प्रोड्यूसर, औषधि कंपनी वाले, अमीर, पत्रकार, वकील, पुलिस, जज जैसे लोगों के मुखौटे के पीछे वास करने वाली उनकी क्रूर प्रवृत्ति व षड्यंत्रों का पर्दाफाश किया है। 'घरौंदा' नाटक में उन्होंने वर्तमान जीवन का यथार्थ चित्रण किया है। इस नाटक में महानगरीय जिंदगी में 'घर की समस्या' के स्वर को अभिव्यक्ति प्रदान की गई है। बम्बई जैसे महानगरीय जीवन की जटिलताओं ने वहाँ रहने वाले व्यक्तियों के जीवन–मूल्यों एवं उनकी दृष्टि को कितना परिवर्तन किया है, इसका चित्रण इस नाटक में हुआ है।

1.डॉ. सुनील कुमार लवटे, नाटककार शंकर शेष, पृ. – 1
2.लवकुमार लवलीन, समकालीन रंगधर्मी नाटककार, पृ. – 73
3.डॉ. रमाकांत दीक्षित, शंकर शेष के नाटकों का रंगमंचीय अनुशीलन, पृ.–21–22
4.डॉ. सुरेश गौतम एवं वीणा गौतम, राजपथ से जनपथ नटशिल्पी शंकर शेष,पृ–17
5.डॉ. सुरेश गौतम एवं वीणा गौतम, राजपथ से जनपथ नटशिल्पी शंकर शेष,पृ–63
6.वही, पृ. – 77
7.डॉ. सुरेश गौतम एवं वीणा गौतम, राजपथ से जनपथ नटशिल्पी शंकर शेष,पृ–88
8.हेमंत कुकरेती, शंकर शेष (समग्र नाटक, भाग–2), बाढ़ का पानी, पृ. – 56
9.डॉ. रमाकांत दीक्षित, शंकर शेष के नाटकों का रंगमंचीय अनुशीलन, पृ. – 57
10.डॉ. रीताकुमार, स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक, पृ. – 104

11.डॉ. सुरेश गौतम एवं वीणा गौतम, राजपथ से जनपथ नटशिल्पी शंकर शेष,पृ–96
12.डॉ. नरनारायण राय, आधुनिक हिन्दी नाटकः एक यात्रा दशक, पृ. – 103

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org